

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.

The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

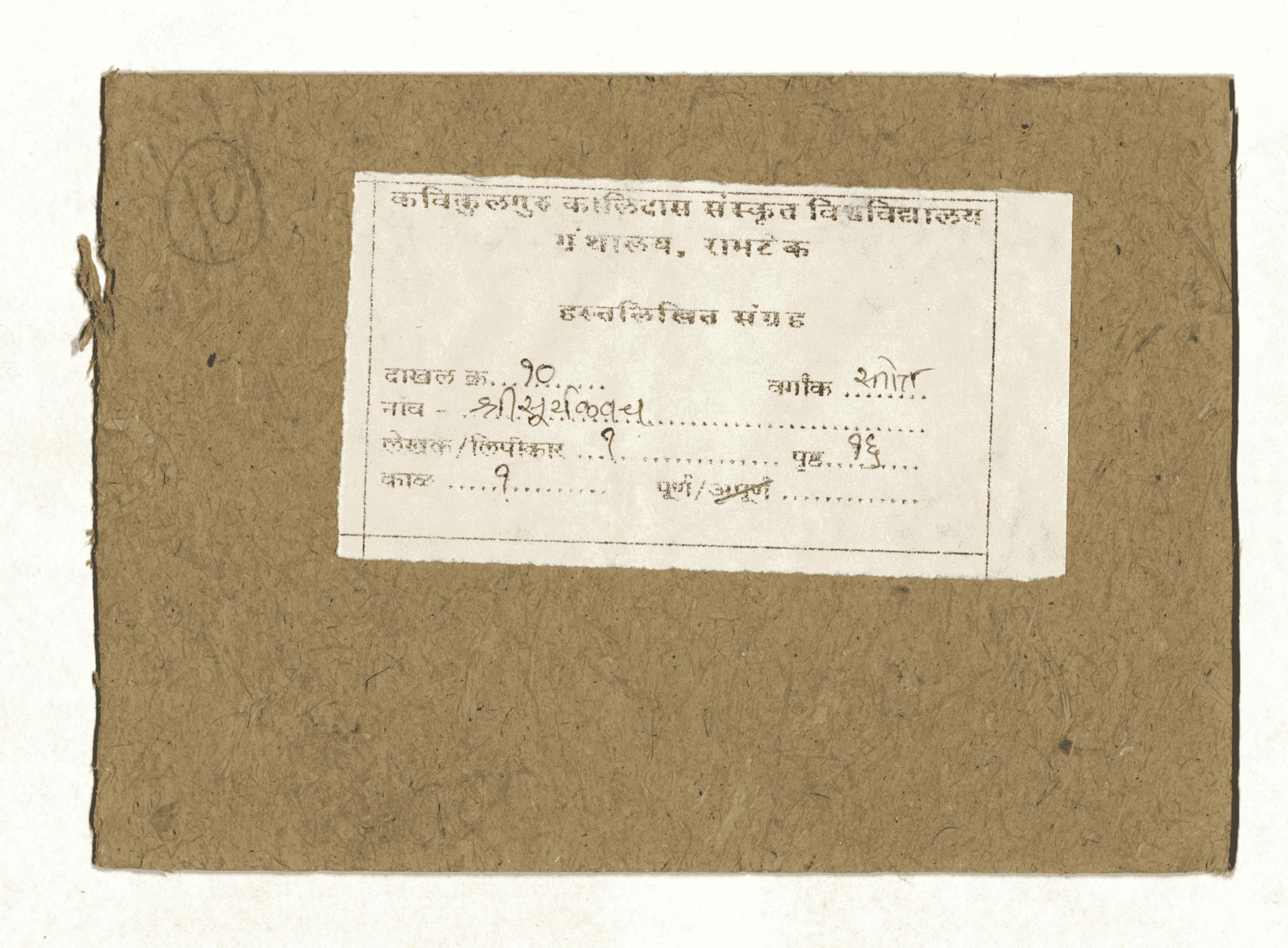
Sincerely,

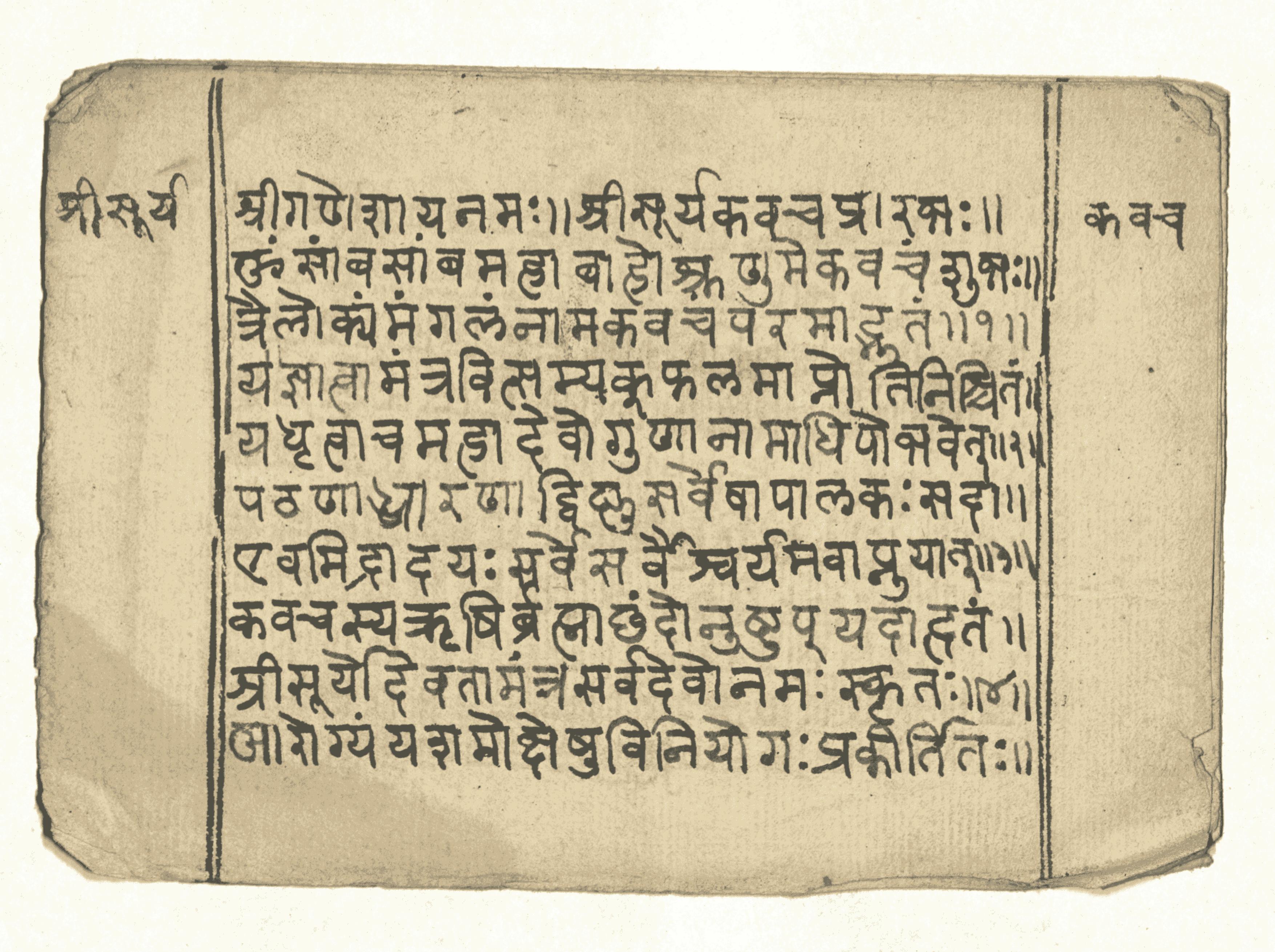
Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection





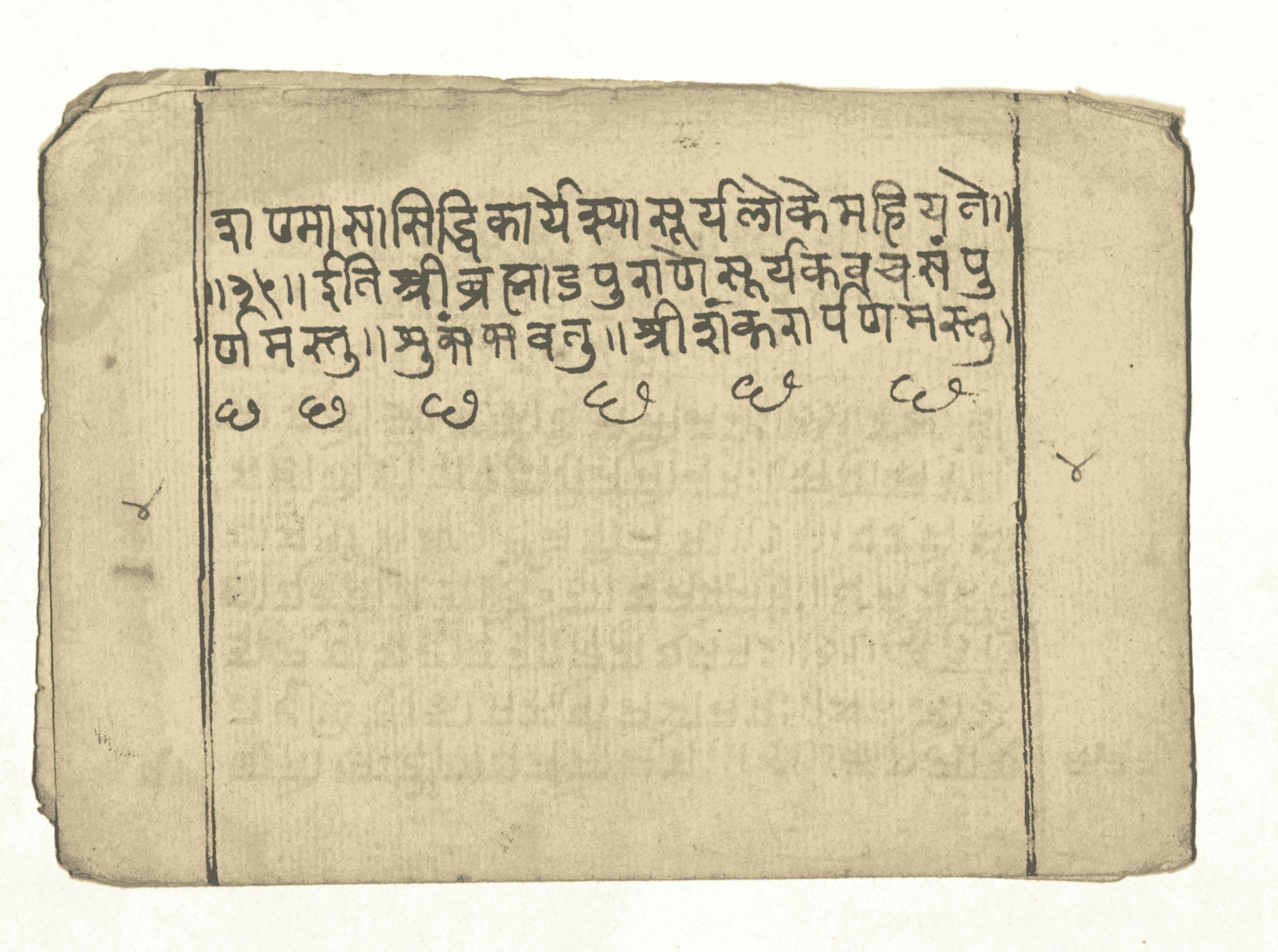
CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

ही बिज मे मु गव पा तु ह ह य शु व ने गंब रि। च द्र बिजिबिष्यदाद्यपातु मे गुह्यदेशिका।णा अष्टाक्राम इ। म इ। सर्वतं ने षु गोपितं॥ श वाविन्ध्यमायु-कावामा सीविद्भूषितारी एकाक्षरो महा मं त्र श्रीसूर्यस्य प्रकीतितः॥ उद्याह ह्यत रोम ने वा का निताम खी सम् ना॥ १॥ बिग्वाहिषादपर्यतं सदापातु समुत्ता माइ। अस्य तितेकिथितंदियंत्रिष्ठलोकेषु दुर्लिमं ॥१०॥ श्री क्रवन् यदंकातिदानि, संधनारा ग्राम्य विवर्धना । क्र कादिरोगर्शम ने महाव्याधीविना राज्या असध्ययः पठिनिसं आरोग्य वलवा नावेत्।। बह्नाकिं महोके नयद्यन्म न सीवति॥११॥ तत्त्रवं मवयव कव वय च धा न णात्।। क्त जेतिषिषा वा श्रायक्र गाधवं वाक्ष सा ॥१३॥ ब्रह्मभग सम्बन्ध ना का तड़ रूप मपीत्रमा इगे देव पला यत तस्य स की ते ना द पी 1984 मू अपिने समाली रब्परोचना गुरुकु मा।

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

विवारे च सं की यं सम्या चिव ष षितः ॥१।॥ धारयसाधकः श्रेक त्रेकोक्यविजयी सवेत्॥। त्रेलाह मध्य गंदा हाथा र यह सि जान ता विश्वावा या मध्य गंदा है। इति ते कथित सा ब बेलीक्य म गला दिका। ॥१९॥क वन्दल मलाके तव श्रीहा विकारिता सा आ वा वंदियं यो जे पे स्यम् मा भाग सिछि ने साय ते न स्थक लमका दि शते रिपा। द्वासूरेमदावद्याह श्रीपिकित ॥१९॥ ध्याय एउस व णां में श्रीम र्यकव वंसदा।। क अस्य श्री सूर्यना रायणा सव चं ॥ उ मारिषः ॥ अवन अनु सुरु दे दः श्री स्याना रायणा दे वता॥ अवन ममसर्वका मनासीध्य थिज येविनि यो गः॥ स क दृणिपात्विगो देशेलला टेपातुका स्कृतः॥ मादिया मे र उयो पातु श्रित पातु दिवा करा गिष्ठा षांपातुसदाभानुम्यक्सक्तार्विः।।जिल्हा पातु जगं ने वं के वे पातु वि रोचनः ॥ २३॥ सके धी प्रहॅपतिपातु भुजोपातु त्रभाकरः।।करा नुजक यः पातु हृद्यं पातु भानु मान्॥ २४॥ मध्य मेपात्। ससा स्वोना िमानु न मो माना है। द्या मान वि

पात् संकानिसवितां विम्हण २५।। उत्पातु सुर् स्योजानु शिरस्य च ॥ जानुनिपातु मात पातुमित्रो विलवपुरत्था।। दि में वं दूर्ता। ने ची: विविद्यविलका मद्। अ। मतत्राता राधायश्रीसूर्यकवचपठेत्र।।ससुरानामपी स्त्राच्योन्धा नुदि मतामपी॥थ्टा सर्वगेगक। या मापानस्व्यतना असश्यशापदाहरतपर् तितः परेशायनमानमः॥ रशाकारकरोद्य मार्तडो जाति गदी यतेन मः॥ कं बोजेन महा वाहो सिद्यायनमानमः॥अर्वलोके तद्यिस्वकामरूपीनमानमः॥अर्वलोके शस्यिद्वाद्शादियय्नमः॥विशास्त्र क्षायत ताय ज्ञा डे॰ गायनमानमः॥ध मिम्लिस यामूती सहमितिमान मः॥३२॥परमेशी महायोगी पापहारीन मोनमः।।समास्वरथ् मार्डा उथ बकायन मानमः॥भेगरक्षा थ मय में ना शा रेश मस्त्रविनारण। सोभा ग्यधनका मच सर्व द्क्निवार णे॥अथ। जा पसारंक्षयंक की हें हो ग भयना राने।।



```
[OrderDescription]
,CREATED=01.08.19 10:59
,TRANSFERRED=2019/08/01 at 11:03:36
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0001211
,Book Name=M-10-SURYAKAVACH
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000006.TIF
```